''भरतपुर संभाग के माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं मानसिक मनोस्थिति का अध्ययन''

''बेटी बचाओं, बेटी पढाओं''

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रूपरेखा

निर्देशिका

प्रो॰ मंजू शर्मा

शिक्षा विभागाध्यक्ष

शोधकर्त्री

लक्ष्मी कुमारी

JVR-1/18/10034

शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग

अनुसंधान और कार्यप्रणाली संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय

जयपुर (राजस्थान) भारत

2018

''भरतपुर संभाग के माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं मानसिक मनोस्थिति का अध्ययन''

1. प्रस्तावना (Introduction)–

शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है – 'सीखना'। ***''ज्ञानं मनुजस्य तृतीय नेत्रं।''*** ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया है। महात्मा गाँधी जी ने शिक्षा को सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया माना है।

शिक्षा को मनुष्य की शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास की प्रक्रिया माना है। परन्तु शिक्षा के बदलते हुये वर्तमान स्वरूप ने शिक्षकों को मानसिक व बौद्धिक स्तर पर तनाव से ग्रस्त बना दिया है जिसके कारण शिक्षकों का मानसिक व बौद्धिक एवं सांवेगिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। शिक्षकों को देश का निर्माता माना जाता हैं। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी में पाठ्यवस्तु ही स्थानान्तरित नही की जाती है अपितु शिक्षक अपने व्यक्तित्व की छाप भी छोड़ता है। एक अच्छा शिक्षक छात्रों को प्रभावी मार्गदर्शन कर उन्हें अच्छा मानव बनाने का प्रयास करता है। उसमें अच्छे गुण अधिरोपित करने का यथा शक्ति प्रयास करता है और वही शिक्षक प्रभावी कहलाने योग्य है जो शिक्षण प्रक्रिया के दौरान निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये विषयवस्तु का शिक्षार्थी को अधिगम करा कर वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ उनमें अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन की क्षमता रखे।

मानसिक स्वास्थ्य के रूप में शिक्षक अपनी क्षमताओं को महसूस करता है। शिक्षक क्षमताओं के द्वारा मानसिक व बौद्धिक तनाव को दूर कर सकता है। मानसिक स्वास्थ्य व्यवहार से सम्बन्धित होता है जिसके द्वारा जीवन के सामान्य

तनाव से निपटा जा सकता है। विभिन्न विचारों व बाधाओं के मध्य संतुलित व्यवहार बनाया जा सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य मन की स्थिति पर जो कि एक सूक्ष्म वस्तु है तथा तंत्रिका तंत्र की कार्य पद्धति पर जो स्थूल है पर निर्भर करता है। तंत्रिका तंत्र मन के कार्य करने का एक माध्यम है क्योंकि इसके द्वारा ही मनुष्य की आत्मपरक प्रकाश का या मन का बाहरी जगत से सम्पर्क कराया जाता है।

अतः मानसिक स्वास्थ्य की चर्चा करते समय हमें मन की स्थिति एवं तंत्रिका तंत्र की कार्य पद्धति की स्थिति पर ध्यान अवश्य रखना होगा लेकिन सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि व्यक्तित्व का मानसिक पक्ष क्या होता है तथा मन का शरीर और पूरे व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ता है?

मन चैतन्य और शरीर के मध्य होने के कारण दोहरा कार्य करता है। वह पूर्ण चैतन्य से जीवन की शक्ति प्राप्त करता है और फिर उसे शरीर एवं अन्य बाहरी सापेक्षित जगत को पहुँचाता है। जिस प्रकार जड़ की प्रक्रिया में कोई व्यवधान आ जाने से पेड़ हरा–भरा नहीं रह सकता, उसी प्रकार यदि मन पूर्ण चेतना से पर्याप्त जीवन शक्ति ग्रहण नहीं करेगा तो शरीरऔर व्यक्तित्व क्षीण एवं अस्वस्थ हो जायेंगे। मन की प्रवृत्ति चंचल होती है, वह हमें अपनी उंगली पर नचाता रहता है। अनेक प्रलोभन देता है, कभी आसमान पर ले जाता है तो कभी धरती पर पटक देता है तो कभी पल भर में सारा ब्रह्माण्ड घुमा देता है। कहने का आशय है कि मन की गति सबसे तेज होती है।

शारीरिक तौर पर अक्षम व्यक्ति भी मन के सहारे बरसों जीवित रह सकता है। मन की ऊर्जा एक ऐसी ताकत है जिसका कोई विकल्प नहीं है। हमारे मन में

से ही हमारे व्यक्तित्व का पता चलता है। महात्मा गाँधीजी का जीवन अपने मन की शुद्धि पर ही केन्द्रित रहा। वे मानते थे कि शारीरिक शक्ति पर नैतिक बल से काबू पाया जा सकता है और इसके लिए मन का पूरी तरह स्वस्थ होना जरूरी है।

ठीक ही कहा है – मन की उच्च अवस्था में पहुँचकर मनुष्य एकदम परिष्कृत, साफ और कोमल हो जाता है। मन पर जमा उन्माद, अवसाद तिरोहित हो जाता है। मन से ही हम दूसरों के साथ सामंजस्य बिठाते हैं, सबसे जुड़कर रहते है। मन, भावनाओं, विचारों, विश्वास की अनगिनत भावनाओं का गुलदस्ता है। **जे कृष्णमूर्ति का मानना है –**''जब हम कुछ करना चाहते हैं या किसी लालसा को पैदा करते हैं तो हमारा मन उसी तरह से एक निश्चित पैटर्न में जम जाता है। फिर धीरे–धीरे वह विचार सघन होते जाते है और इंसान इसी निश्चित पैटर्न की पकड़ से आगे बढ़ता है।''

बीसवीं शताब्दी में ऑस्ट्रियाई मनोचिकित्सक सिंगमड फ्रॉयड हुए जिनके सम्पूर्ण विमर्श में मन का जिक्र, मस्तिष्क की चेतन व अवचेतन अवस्थाओं के रूप में परिलक्षित होता है और व्यापक अर्थों में मन मस्तिष्क की विभिन्न अवस्थाओं में मानकों का प्रतिफलन ही है।

मानसिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से तंत्रिका तंत्र के संतुलित कार्य करने पर निर्भर करता है। जब हम अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं को यथार्थ रूप नहीं दे पाते तब हमें असंतुष्टि और कुण्ठा की अनुभूति होती है, जिसे विचार शक्ति में वृद्धि करके मन को सशक्ति किया जाता है।

मन की कुंठाऐं एवं तनाव तंत्रिका तंत्र के माध्यम से शरीर पर विपरीत प्रभाव डालती है, जिससे मस्तिष्क व शरीर प्रभावित होकर कमजोर बन जाता है तथा अशक्त व तत्परता से कार्य करने में असमर्थ हो जाता है।

इसी मानसिक तनाव से मानसिक व शारीरिक विकार बन रोग होते है जिसका स्पष्टतः निदान यही है कि मन को चंचल होने से बचायें उसमें सामंजस्य व संतुलन बनाये रखे। मन के चेतन क्षेत्र को विकसित कर सशक्त चेतनाशील बनाये रखे।

अतः स्वस्थ वातावरण बनने से मन और शरीर चैतन्य धरातल पर सामान्य गति से विकासशील होकर उन्नति करेगा जिससे जीवन में स्वस्थ संतुलन बनेगा।

मनोवैज्ञानिक के अनुसार शरीर और मस्तिष्क के बीच गहरा सम्बन्ध है। यदि हमारे मस्तिष्क में नकारात्मक या निराशावादी विचार उठते हैं तो इसका विपरीत प्रभाव शरीर पर पड़ता है, दूसरी ओर यदि हम सकारात्मक और आशावादी विचारों से ओत–प्रोत रहते हैं तो शरीर पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

हमारे मन व बौद्धिक विकास को बहुत सारे तथ्य प्रभावित करते हैं –

❖ भावनात्मक संतुलन –

मनुष्य का प्रिय मित्र और अप्रिय शत्रु उसका मन है। मन में आश्रित आशाएँ, आकांक्षाएँ और उनकी प्राप्ति–अप्राप्ति सम्बन्धी दृढ़ संकल्प व्यक्ति के क्रियात्मक जगत की रचना करता है। क्रिया पूर्ण होने पर मनुष्य गरिमामय व थोड़ा अहंकारी बनता है। हमारा अहंकार आग के दरिया के समान है पार वही करेगा जिसका मन नियंत्रित और संतुलित है। मनुष्य के कार्यों में आने वाले उतार–चढ़ाव दोनों मनुष्य के बौद्धिक और भावनात्मक पक्ष को प्रखर करते है।

❖ समग्र समायोजन (Overall Adjustment)–

यदि बालक को अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं होता है तो उसमें मानसिक तनाव और संवेगात्मक संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। यदि बालक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने

में सफल हो जाता है तो वह अपनी परिस्थितियों से समायोजन कर लेता है। यदि उसे सफलता नहीं मिलती है तो वह असमायोजन की स्थिति में आ जाता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है।

गैट्स के अनुसार –

''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

❖ संवेगात्मक (Emotional)–

इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के 'इमोवेयर' (Emovere) से हुई है, जिसका अर्थ है– 'उत्तेजित होना'।

इस प्रकार संवेग को व्यक्ति की उत्तेजित दशा कहते हैं। जब व्यक्ति किसी कारण उत्तेजित दशा में होता है तो उसे ही संवेग कहते हैं। इस दशा में व्यक्ति का बाह्य व आन्तरिक व्यवहार बदल जाता है।

कुछ मुख्य संवेग है – सुख, दुख, प्रेम, भय, क्रोध, आशा आदि।

वुडवर्थ –

''संवेग वुडवर्थ की उत्तेजित दशा है।''

क्रो व क्रो के अनुसार –

''संवेग, गतिशील आन्तरिक समायोजन है, जो व्यक्ति के संतोष, सुरक्षा और कल्याण के लिए कार्य करता है।''

2. शोध से सम्बन्धित साहित्य :–

1. **पांडे, मनोज (2015)** ने बी.एड. छात्रों के मध्य आत्मसिद्धि के स्तर पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में शिक्षण प्रशिक्ष्ण महाविद्यालय से कुल (200) बी.एड. छात्रों का चयन किया जिसमें 100 छात्र तथा 100 छात्राऐं थी। निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात हुआ कि छात्र तथा छात्राओं के मध्य आत्मसिद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसी प्रकार संकाय की दृष्टि से विज्ञान तथा कला के विद्यार्थियों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

2. **राव, सुनील (2015)** ने माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण किशोरों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर एवं देहात के 600 छात्रों का चयन किया गया जिसमें 300 शहरी क्षेत्र के तथा 300 छात्र ग्रामीण क्षेत्र के थे।

   निष्कर्ष में यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का समायोजन शहरी छात्रों की तुलना में कम है।

3. **त्रपाठी, लोकपति (2014)** ने माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि और आत्मसिद्धि का व्यक्तित्व के सन्दर्भ में अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में उन्होंने कुल (400) विद्यार्थिीं को चुना। इसमें (200) छात्र तथा (200) छात्राऐं थी।

   निष्कर्ष के रूप में पाया कि छात्र तथा छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि और आत्म सिद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

4. **सिंह, जितेन्द्र (2014)** ने शारीरिक विकलांगता एवं सामान्य विद्यार्थियों के मध्य समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में बरेली

जिले के 500 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें (250) विद्यार्थी शारीरिक विकलांगता वाले तथा (250) सामान्य थे।

निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा शारीरिक विकलांगता विद्यार्थी कम समायोजन कर पाते है।

5. **सिन्हा, शरद तथा यादव ज्यादि (2011–12) ने –**

''रेवाड़ी जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।''

शीर्षक पर अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि –

(1) गैर सरकारी व सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

(2) गैर सरकारी तथा सरकारी स्कूलों के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(3) गैर सरकारी तथा सरकारी स्कूलों की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

6. **दुआ, राध तथा शर्मा, नमिता (2011–12) ने –**

''मानसिक स्वास्थ्य पर घरेलू वातावरण का प्रभाव माध्यमिक स्तर का अध्ययन'' शीर्षक पर अध्ययन किया। जिसमें यह निष्कर्ष पाया गया है –

उच्च नियंत्रण संरक्षण, उच्च अनुपालन, उच्च पोषण, उच्च पारितोष तथा निम्न दण्ड अधिकारों के वंचन उत्तम मानसिक स्वास्थ्य के कारक है।

7. **मिालती (2011)** ने उत्तरप्रदेश बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलबिध, बुद्धि एवं मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

परिणाम यह निकला कि उत्तरप्रदेश बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों के मूल्य एवं बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं शैक्षिक उपलबिध का मूल्य एवं बुद्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है।

8. **वोकार्ड, सैम (2009) ने –**

''तार्किकता एवं कक्षा स्तर पर अध्ययन'' किया, जिसमें विद्यार्थियों के कक्षा स्तर के बढ़न के साथ तार्किक क्षमता में सम्बन्ध पाया कि ये दोनों धनात्मक सह–सम्बन्ध रखते हैं अर्थात् उच्च कक्षा स्तर में पाये जाने वाले विद्यार्थियों में तार्कितता का स्तर उच्च एवं निम्न कक्षाओं मं तार्किकता का स्तर निम्न पाया जाता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कक्षा वृद्धि के साथ–साथ तर्क शक्ति का विकास होता जाता है।

9. **गुप्ता, लिलेश (2002)** ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 99 छात्रों पर भविष्य के प्रति जागरूकता व्यावसायिक रूचि एवं विद्यालय में समायोजन का अध्ययन किया। जिनमें छात्रों को उच्च, मध्य, निम्न स्तरों में बाँटा गया। निष्कर्ष में पाया गया कि निम्न आय वर्ग वाले छात्रों की तुलना में उच्च आय वर्ग के छात्र अपने भविष्य के प्रति अधिक जागरूक और अधिक समायोजित है।

10. **कुशवाह आरती (2003)** ने अपने अध्ययन में 300 किशोर बालक–बालिकाओं पर किशोर एवं अभिभावक सम्बन्धों का संवेगात्मक परिपक्वता एवं बौद्धिक विकास का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया जिसमें पाया गया कि विभिन्न आय वर्ग एवं विभिन्न किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में

अन्तर पाया। संवेगात्मक परिपक्वता, बौद्धिक विकास एवं किशोर समायोजन में सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

11. **नायक, निवेदिता (2005)** ने न्यादर्श के रूप में 352 शिक्षकों पर मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का उनकी आत्म अवधारणा के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव पर अध्ययन किया एवं निष्कर्ष के रूप में पाया कि विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं विभिन्न चरों के बीच में सह–सम्बन्ध गुणांक में सार्थक अन्तर पाया गया।

12. **रवनीत (2005)** ने कक्षा 9 के एकल बालक परिवार के 100 छात्रों एवं 100 छात्राओं बहु बालकों परिवार के 100 छात्र एवं 100 छात्राओं पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं घरेलू वातावरण के बीच आक्रामकता एवं समायोजन का अध्ययन किया जिसमें पाया गया कि छात्र–छात्राओं की तुलना में अधिक आक्रामक होते है। छात्र एवं छात्राओं पर सामाजिक समायोजन का प्रभाव नहीं पड़ता एवं एकल परिवार के बालकों में बहुबालकों की तुलना में अधिक सामाजिक समायोजन क्षमता वाले एवं उच्च शिक्षा में अधिक समायोजित होते है।

13. **मंडिया (2010) –**

ने 22 वर्ष की उम्र वाली प्रशिक्षु अध्यापिकाओं की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि उनमें बहुत–सी मानसिक स्वास्थ्य समस्यायें थी। इस अध्ययन से शैक्षिक परामर्श में मनोवैज्ञानिक

मापन की महत्ता एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए उचित मनोचिकित्सा का अभाव सामने आया।

14. हैप्पी, बारबरा (1994) ने –

''युवा वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक स्थिरता का उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।''

प्रस्तुत शोध में निष्कर्ष के रूप में पाया कि किशोर अवस्था में विद्यार्थियों की सांवेगिक स्थिरता का उनके शैक्षणिक स्तर व आयोजन पर सकारात्मक व प्रत्यक्ष सह–सम्बन्ध है।

15. स्मॉल (1976) –

ने अपने अध्ययन में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के स्त्री–पुरूष शिक्षकों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का प्रचलन नहीं पाया। प्राथमिक उपनगरीय पुरूषों ने उपनगरीय महिलाओं की अपेक्षा सीखने में ज्यादा समस्याएँ पाई गई।

3. शोध समस्या का औचित्य –

शैक्षिक महत्व की दृष्टि से बुद्धि व मानसिक क्रियाकलाप मनुष्य का पूर्ण विकास करते है। अध्यापक शिक्षा, समाज, देश के लिए सुयोग्य नागरिक तैयार कर एक उत्पादन इकाई का निर्माण करते है। अध्यापकों का अपने व्यवसाय के प्रति संतोष–असंतोष विद्यार्थियों के व्यवहार में प्रतिबिम्बित होता है। प्रभावी शिक्षण ही अपने विद्यार्थियों में अनुशासन का विकास व प्रभावशीलता ही स्वस्थ व स्वस्थ समाज व देश का निर्माण कर सकता है।

4. समस्या का चयन –

''भरतपुर संभाग माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं मानसिक मनोस्थिति का अध्ययन''

5. अध्ययन का उद्देश्य –

वर्तमान शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नानुसार है –

(1) माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि का अध्ययन करना।

(2) माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की मानसिक मनोस्थिति का अध्ययन करना।

(3) माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि व मानसिक मनोस्थिति में सह–सम्बंध का अध्ययन करना।

(4) माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि व मानसिक मनोस्थिति के सम्पूर्ण प्रभाव का अध्ययन करना।

6. शोध की परिकल्पना –

(1) सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

(2) सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की मानसिक मनो–स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(3) सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि व मानसिक मनोस्थिति में काई सार्थन सह–सम्बंध नहीं पाया जाता है।

(4) सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि व मानसिक मनोस्थिति की प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

7. समस्या का परिसीमन –

प्रस्तुत शोध कार्य भरतपुर संभाग के जिलो तक सीमित है, जिसमें भरतपुर संभाग के (भरतपुर, करौली, धौलपुर, सवाईमाधोपुर) जिलों के सरकारी व गैर–सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की महिला शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

8. न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्ता ने आँकड़ों के चयन हेतु राजस्थान राज्य के भरतपुर संभाग जिलों में स्थिति विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में से 240 सरकारी तथा 240 गैर सरकारी माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों को चयनित किया है।

➢ **न्यादर्श चयन विधि –**

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

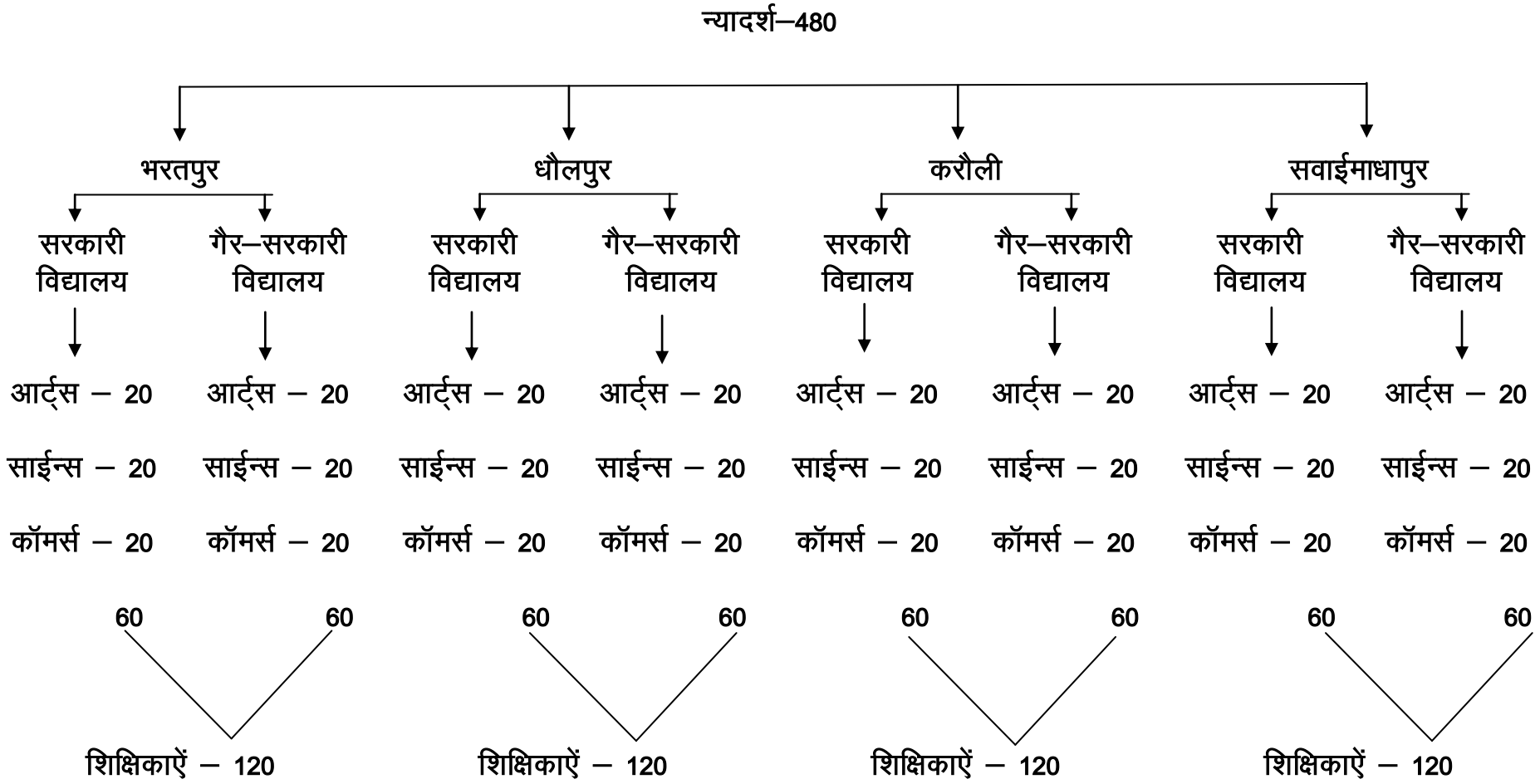
न्यादर्श–480
भरतपुर
धौलपुर
करौली
सवाईमाधापुर
सरकारी विद्यालय
गैर–सरकारी विद्यालय
आर्ट्स – 20
साईन्स – 20
कॉमर्स – 20
60
शिक्षिकाऐं – 120

9. शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण –

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी द्वारा प्रमापनी, पहली संवेगात्मक बुद्धिलब्धि प्रमापनी व दूसरी मानसिक मनोस्थिति प्रमापनी का प्रयोग किया गया है।

10. शोध विधि –

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इसके द्वारा वर्तमान परिस्थितियों का अध्ययन किया जा सकता है। अतः भरतपुर संभाग के माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि व मानसिक मनोस्थिति का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान में इस विधि का प्रभावी प्रयोग किया गया।

11. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दत्त विश्लेषण हेतु निम्नांकित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया –

(1) मध्यमान

(2) मानक विचलन

(3) टी–परीक्षण

(4) सह–संबंध

शोध ग्रंथ सन्दर्भ सूची

(1) Tiwari, M. (1999): "Idently status and emotional intelligence of female college students."

(2) Pandey, M.K. (2000): "Emotional intelligence of adolescent students in relation to their achievement in mathematics academic stream and gender."

(3) Tyagi, S.K. (2004): "Emotional intelligence of secondary teachers in relation to gender and age."

(4) Singh, K.K. (2005): "A comparative study of emotional intelligence on rural and urban school students."

(5) Singh, Poonam (2006): "A study of examination, stress in relation to emotional intelligence."